विश्वविद्यालय कुलगीत

गुरुकृपा के पुण्य परस से, विद्या का वरदान है।
घासीदास विश्वविद्यालय, हम सबका अभिमान है।

महानदी, शिवनाथ, नर्मदा, हसदो, पावन धारा है ।
अंतःसलिल अरपा का, सतत् प्रवाह हमारा है ।
छत्तीसगढ़ की माटी का, यह अभिषेक महान है ।

भोरमदेव, सरगुजा, शिवरी, रतनपुर, मल्हार यहीं ।
कालीदास का आम्रकूट है, अमर काव्य शृंगार यहीं ।
धरती, गगन, सघन वन गूंजे, जीवन का नवगान है।

शस्य श्यामला धरती है, खेतो में हरियाली है।
नये भगीरथ कोरबा जैसी, लोक–शक्ति की लाली है।
जाग उठे हैं गांव हमारे, जागे सभी किसान हैं।

ज्ञान सभ्यता से आलोकित, विद्वतजन् सम्मान यहाँ।
माधव, लोचन, मुकुटधर पाण्डेय, बख्शी जी अरूभानु यहाँ।
राव, विप्र, रविशंकर, छेदी, कुंवरवीर का गान है।

मानव मूल्यों का सृजन करें हम, समता, ममता, शांति भरे।
हर्षित, पुलकित हो भारत माँ, सुख–समृद्धि सर्वत्र झरे।
विद्या–मंदिर के प्रांगण से, नव–युग का अभियान है।
गुरू कृपा के पुण्य परस से.....

कुलगीत की रचना सुप्रसिध्द राजनेता, साहित्यकार एवं
कवि हृदय स्व. पं० राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल, प्रथम अध्यक्ष, छत्तीसगढ विधानसभा द्वारा की गई है।